om-20a_Page 1 and 2 1/20/2014 7:58 PM Page 11

ऊटी। स्वामी विवेकानंद की 150वीं पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ धार्मिक प्रभाग के कोऑर्डिनेटर ब्र.कु.रामनाथ। साथ हैं स्वामी राघवेशानंद, डॉ. ए. अमलराज, डॉ.पी.ए.सिद्दीकी, स्वामी युक्तेशानंद, एवं ब्र.कु.क्रिशनन।

मुंबई-मलाड। मेडिकल कैंप के उद्घाटन अवसर पर दीप प्रज्वलन करते हुए डॉ.अल्पा भानुशाली, फिल्म कलाकार राहुल रॉय एवं कुनिका लाल, ब्र.कु.कुंती, ब्र.कु.चाँद मिश्रा तथा अन्य।

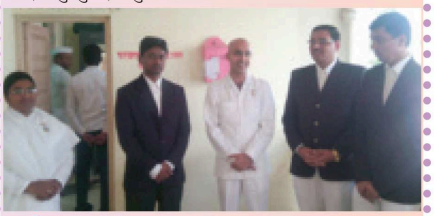

राहूरी। सिविल कोर्ट में तनावमुक्त जीवन कार्यक्रम के पश्चात समूह चित्र में न्यायमूर्ति लांडगे, न्यायमूर्ति कुलकरनी, ब्र.कु.गिरीश एवं ब्र.कु.नंदा।

लंडन। "महिला सशक्तिकरण" कार्यक्रम के पश्चात समूह चित्र में ब्र.कु.साधना तथा अन्य।

रांची। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कलचरल कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बैकवर्ड क्लास कमिशन के चेयरपर्सन जस्टिस वी.ईश्वरैया, जस्टिस लोकनाथ प्रसाद, ब्र.कु.निर्मला एवं सी.ए. इंस्टीट्यूट के चेयरमैन एस.के.श्रीवास्तव।

सेंधवा। दिव्य उद्बोधन "आओ ज़िंदगी सुखमय बनाएँ" का उद्घाटन करते हुए राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, लायन्स क्लब अध्यक्ष बी.एल.जैन, गायत्री प्रमुख मेवालालजी, ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.निशा, ब्र.कु.छाया तथा अन्य।

पिताश्री के साथ के अविस्मरणीय पल

पिताश्री जी का व्यक्तित्व दिव्य था

मुंबई, सायन से ब्रह्माकुमारी सन्तोष बहन जी अपने अनुभव में कहती है कि ब्रह्माबाबा से मैं पहली बार सन् 1965 में मिली। उसी समय हिस्ट्री हॉल बना था, उसमें ही मैं साकार बाबा से मिली थी। बाबा से पहली मुलाकात मैं कभी भूल नहीं सकती। मैं तो मधुबन यह देखने आई थी कि ये लोग कहते हैं कि निराकार परमात्मा ब्रह्मा तन में आते हैं, वो कैसे आते हैं अथवा आते भी हैं या नहीं आते हैं। इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए ही मैं बाबा से मिलने आई थी। पहली ही नज़र में मुझे यह विश्वास हो गया कि परमात्मा शिव इसी तन में आ सकता है और कोई तन में नहीं। क्योंकि बाबा का दिव्य व्यक्तित्व और फ़रिश्ता रूप था। ऐसे रूप मैंने ज़िन्दगी में कहीं नहीं देखा था। बाबा के व्यक्तित्व और रूहानी स्नेह ने मुझे आकर्षित कर लिया। बाबा से पहली मुलाकात में ही मैंने यह फैसला ले लिया कि मुझे जीवन बनाना है तो ऐसा ही श्रेष्ठ बनाना है और बाबा की आज्ञाओं पर चलकर दूसरों का भी जीवन ऊँचा बनाना है। पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने इतनी पालना दी है कि यह पालना न लौकिक से मिल सकती है, न देवताओं से मिल सकती है। इतनी सुन्दर,पवित्र, सुखमय, अलौकिक परवरिश बाबा ने की है। बाबा साकार में होते भी आकारी रूप में आ-जाकर सेवा करते थे, ऐसे कइयों के अनुभव हैं। एक बार मैं किसी सेन्टर पर किसी एक समस्या का समाधान करने गयी थी। मैं जो भी करती थी बृजेन्द्रा दादी अथवा बाबा से पूछकर ही करती थी। मैंने उस स्थान से मुंबई फोन लगाया, बहुत कोशिश की, तो भी नहीं लगा। फिर मधुबन में बाबा को फोन करने की कोशिश की। वहाँ भी नहीं लगा। मैं बहुत परेशान हो गयी। क्या करूँ, परिस्थिति ऐसी थी कि मुझे दादी या बाबा से पूछना ही था। मुझे उस समय ऐसा अनुभव हुआ कि मैं इस दुनिया में अकेली हूँ, मुझे मदद करने वाला कोई नहीं है। मन बहुत भारी हो गया था, क्या करूँ समझ में नहीं आ रहा था। उतने में मुझे लगा कि मेरी बाजू में कोई आकर खड़े हुए हैं। देखा तो बाबा मुस्कराते हुए खड़े थे। मैं आश्चर्य और खुशी से दंग रहकर बाबा को ही देख रही थी। बाबा ने कहा, बच्ची, तुम अकेली कहाँ हो? बाबा तुम्हारे साथ है, सदा रहेगा। उस दिन से लेकर आज तक मुझे अकेलेपन की महसूसता कभी हुई ही नहीं।

-ब्र.कु. संतोष महाराष्ट्र एवं आंध्र प्रदेश क्षेत्र की संचालिका

बाबा की दृष्टि मिलते ही मेरे स्वास्थ्य में परिवर्तन आया

ब्र.कु. पुष्पा बहन जी कहती हैं, सन् 1956 में करनाल में सेवा आरम्भ हुई। तब मैं, लौकिक माँ तथा लौकिक बहन सावित्री जी के साथ नियमित ज्ञान-अमृत का लाभ लेती रही। बाबा से मिलने से पूर्व बाबा को मैंने पत्र लिखा कि सेवा में समर्पित होने की मेरी बहुत इच्छा है। मनोहर दादी जी को वो पत्र दिया। दादी जी ने भी बाबा को हमारे परिवार का समाचार तथा मेरे स्वास्थ्य के बारे में लिखा कि तबीयत बहुत नाज़ुक है। ठीक 7 दिन के बाद बाबा का लाल अक्षरों में हस्तलिखित पत्र पाया। बाबा ने लिखा था,'बच्ची का पत्र पाया। अगर यज्ञ में रहना चाहती है तो रह सकती है। अगर बच्ची बीमार है तो इसका इलाज देहली में कराया जा सकता है। बशर्ते माँ (मम्मा) से मिले।' लगभग 15 दिन के बाद मम्मा-बाबा का देहली में आगमन हुआ। मैं, मनोहर दादी जी तथा लौकिक माता जी के साथ देहली पहुँची। पहली मुलाकात में ही बाबा के अलौकिक व्यक्तित्व की छाप मेरे मानस पटल पर अंकित हो गयी। बाबा को फ़रिश्ते के रूप में देखकर अंतरात्मा ने महसूस किया कि जो पाना था सो पा लिया। प्यारे बाबा ने जो पत्र लिखा था कि बच्ची का इलाज देहली में कराया जा सकता है - यही वाक्य मेरे लिए वरदान सिद्ध हुआ। देहली भूमि पर बाबा की दृष्टि मिलते ही मेरे स्वास्थ्य में परिवर्तन आना आरम्भ हुआ। जो दवाइयाँ और परहेज मैं करती थी, सब बन्द कर दिये, बाबा ने दृष्टि से ही मुझे निरोगी भव का वरदान दे दिया। बाबा को पाकर गीत की ये पंक्तियाँ याद आ गयी, "किसी ने अपना बनाके मुझको, मुस्करना सिखा दिया...। मेरे जीवन को देख लौकिक के कई सदस्य ज्ञान में चलने लगे और कई समर्पित रूप से सेवायें देने लगे।

-ब्र.कु.पुष्पा विदर्भ क्षेत्रीय संचालिका, नागपुर (महाराष्ट्र)

मेरे दिल से निकला कि यही है, यही है

अहमदाबाद, महादेव नगर की ब्र.कु. चन्द्रिका बहन जी कहती हैं कि सन् 1965 की बात है कि एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में करीब 3.30 बजे मैं कुर्सी पर बैठी थी। ईश्वर-चिन्तन में ही मगन थी। तभी मैंने सफेद प्रकाश की काया वाले व्यक्ति में लाल प्रकाश को प्रवेश करते देखा। कुछ ही सेकेण्ड के बाद वह आकर्षक स्वरूप मेरे निकट आया। मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा, बच्ची,मैं भारत में आया हूँ, तुम मुझे ढूँढ़ लो। बहुत ही स्पष्ट रूप से दो बार यह आवाज़ मैंने सुनी और तभी से लेकर मैं कई सत्संगों में, धर्मगुरु, धर्म-उपदेशक और धर्म-प्रचारकों के पास जाने लगी कि जिन्हें ध्यानावस्था में देखा था वह मुझे ज़रूर कभी साकार में मिल जायेंगे। काफी सत्संगों में जाने के बावजूद भी मुझे उस दिव्य पुरूष के दर्शन नहीं हुए। कुछ मास के बाद हमारे नज़दीक ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से साप्ताहिक कोर्स का आयोजन हुआ। मेरे माता-पिता सहित पूरे परिवार ने तो सात दिन जाने का फैसला कर लिया लेकिन मैंने इन्कार कर दिया था। आखिरकार एक दिन पिताजी ने कहा-बेटी तुम भी चलो, तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा। उस दिन मैं पिता जी के साथ गयी। तब कल्पवृक्ष का पाठ चल रहा था। मैंने चित्र में ब्रह्मा बाबा की तस्वीर देखी और सुना कि परमात्मा शिव इनके तन से गीता-ज्ञान दे रहे हैं। इस बात को सुनते ही मुझे कुछ महीने पहले ध्यानावस्था में देखा वो दृश्य याद आ गया और मेरे दिल से आवाज़ निकली कि यही है, यही है, यही है जिस छवि की मैं इतने दिनों से तलाश कर रही थी।

-ब्र.कु.चंद्रिका राष्ट्रीय संयोजिका युवा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

बाबा को देखते ही लाईट का अनुभव हुआ

ब्र.कु.सत्यवती बहन जी अपने अनुभव सुनाती हैं कि प्यारे, मीठे बाबा से मेरा पहला मिलन सन् 1961 में मधुबन में हुआ। जैसे ही हम आये तो बाबा धोबीघाट पर खड़े थे। देखते ही बाबा ने हमें गले लगाया और कहा, "आ गयी मेरी मीठी,प्यारी बच्ची।" बाबा के यह बोल सुनते ही मुझे अनुभव हुआ कि जो कुछ है, सर्वस्व यही है। उसी क्षण मेरी बुद्धि का लगाव, झुकाव सब तरफ़ से खत्म हो गया। एक बार मैं अपने गाँव में सवेरे क्लास में जा रही थी तो बीच में एक चोर मिला और उसने मेरे गले की चेन खींची, मैंने उसका सामना किया। जब बाबा को मैंने यह समाचार सुनाया तो बाबा ने मुझसे कहा, यह मेरी शेरनी बच्ची है जो गुण्डे का सामना करके आई है। उसी समय से डर बिल्कुल समाप्त हो गया। जब-जब कोई परिस्थिति आती है तो ऐसा महसूस होता है जैसे कि बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है। एक बार बाबा के साथ झूले में झूल रही थी। बाबा ने पूछा - बच्ची, किसके साथ झूल रही हो? मुझे ऐसे लग रहा था जैसे कि छोटे मिचनू श्री कृष्ण के साथ झूल रही हूँ। बाबा कितने निरहंकारी थे! मुरली क्लास पूरी होने के बाद जब बाबा उठते थे तो दरवाज़े के बाहर जाने तक बाबा बच्चों को नमस्ते-नमस्ते कहते बच्चों की तरफ़ पीठ न करके ऐसे ही पीछे चलते थे और बाहर जाने के बाद मुड़कर जाते थे। उस समय मैंने देखा कि बाबा के मस्तक से एक ज्योति बाहर निकल रही थी। एक बार मैं अमृतवेले 3.30 बजे बाबा के पास गयी। बाबा गद्दी पर बैठे थे। जैसे ही मैंने कमरे में प्रवेश किया, बाबा ने मुझे गले से लगाया तो ऐसा महसूस हुआ जैसे कि कोई शक्ति-शाली फ़रिश्ता और रूई जैसा बहुत हल्का है। हड्डी-मांस का शरीर महसूस ही नहीं हुआ। बाबा मुझे 'फूल बच्ची' कह पुकारते थे।

-ब्र.कु.सत्यवती उपक्षेत्रीय संचालिका, तिनसुकिया असम, ब्रह्माकुमारीज़